फूलो झानो

फूलो झानो
सिद्धू कान्हू की बहना फूलो झानो

जब अंग्रेज सिपाहियों से लोहा लेने
हाथ में कुल्हाड़ी लेकर निकली
तब अंग्रेजों की सेना काँप उठी
काँप उठे जंगल झाड़ी
और देखते ही देखते बदल गयी
जंगल की हवा
साल से लेकर पलाश के पेड़ भी
उठ खड़े हुए उसके साथ उसकी रक्षा में

पहाड़ों ने भी तान दिया अपना सीना
धरती ने भी फैला दिया अपना आँचल
हाथ में कुल्हाड़ी
और आँखों में अंगार लिये
जब निकली घर से कमर कसकर
तब डोलने लगा
ब्रिटिश शासन का सिंहासन

सन् अठारह सौ पचपन में
शोषण और अत्याचार के खिलाफ
जब हुँकार उठी दोनों बहने
तब जाग उठा आदिवासी समाज
जाग उठी आदिवासी महिलाएँ

फेक कलाई की चुड़ियाँ
तोड़ पाँव की बेड़ियाँ
जब निकली घर से
थाम कर तीर कमान
तब अंग्रेजों की सेना
भाग खड़ी हुई लेकर अपनी जान

ऐसी वीरांगना फूलो झानो
की गौरव गाथा का हम गुणगान करते हैं
आदिवासी समाज का सम्मान करते हैं

तेज नारायण राय